सोनी सलोनी
हिन्दी विभाग
वीमेंस कॉलेज,
समस्तीपुर

स्नातक- हिन्दी प्रतिष्ठा द्वितीय खंड
(B.A Part II Hons.)
तृतीय पत्र

पाठ्य विषय - कवि धर्मवीर भारती

श्री चिरंजीव लाल वर्मा एवं श्रीमती चंदा देवी के सुपुत्र डॉ. धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका जन्म 25 दिसंबर 1926 को प्रयाग में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। चौथी कक्षा में पहली बार इलाहाबाद के डी. ए. वी. हाई स्कूल में नामांकन हुआ तदन्तर इनकी शिक्षा-दीक्षा का केन्द्र इलाहाबाद ही रहा। बीच में विषम परिस्थितियाँ भी आईं। छोटी उम्र में पिता का साया ना रहा। 1942 के आंदोलन में भाग लेने के कारण एक वर्ष पढ़ाई भी रुक गई परंतु 1945 में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री प्राप्त की एवं हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के कारण 'चिंतामणि घोष मेडल' के अधिकारी बने।

जीवन की विषमताओं को दूर करने हेतु अर्थोपार्जन के लिए इन्हें छात्र-जीवन से ही ट्यूशन करना पड़ा। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से संबद्ध होना इसी की अगली कड़ी थी। इसी क्रम में वे 'अभ्युदय' एवं 'संगम' से जुड़े। तदुपरांत 'प्रयाग विश्वविद्यालय' में ही अध्ययन- अध्यापन का कार्य किया। इस दौरान 'हिन्दी साहित्य कोश' के संपादन में अपना अभूतपूर्व सहयोग दिया। 'निकष' नामक पत्रिका निकाली एवं 'आलोचना' का संपादन भी किया। उसके बाद भारतीजी

'धर्मयुग' के प्रधान संपादक का दायित्व संभाला एवं इसे हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक के रूप में इसे स्थापित किया।

भारतेन्दु और प्रसाद की अगली कड़ी में ही है डॉ. धर्मवीर भारती जिनकी लेखनी ने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को अलंकृत किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं —

कहानी संग्रह — मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, साँस की कलम से (इसमें इनकी समस्त कहानियाँ एक साथ संकलित हैं।)

कविता :— ठंडा लोहा, अंधा युग, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया सपना अभी भी, आद्यन्त

उपन्यास :— गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा ग्यारह सपनों का देश (प्रारंभ व समापन)।

निबंध :— ठेले पर हिमालय, पश्यन्ती, कही अनकही, कुछ चेहरे कुछ चिंतन, शब्दिता

एकाँकी संग्रह — नदी प्यासी थी

यात्रा विवरण — यात्रा चक्र.

आलोचना — प्रगतिवाद — एक समीक्षा
मानवमूल्य और साहित्य

इसके अलावे रिपोर्टिंग, अनुवाद, यात्रा-विवरण, पत्र संकलन साक्षात्कार जैसी विधाओं में भी इनकी कृतियाँ उपलब्ध हैं।

1972 में इन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से अलंकृत किया गया। पत्रकारिता के लिए इन्हें हल्दीघाटी-श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी द्वारा

'सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार', बिहार सरकार द्वारा 'डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान', उ० प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा 'भारत-भारती पुरस्कार', महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'महाराष्ट्र गौरव' सम्मान, के.के. बिरला फाउंडेशन द्वारा 'व्यास सम्मान' जैसे अनेकों प्रतिष्ठित सम्मान से इन्हें नवाजा गया।

यात्राएँ डॉ. भारती को बहुत सुख देती थीं अतः देश के हर प्रांत में इन्होंने बार-बार अनेक यात्राएँ की साथ ही यूरोप भ्रमण, जर्मनी यात्रा, इंडोनेशिया, थाईलैंड, बांग्ला देश, मॉरीशस आदि विदेशों का भी भ्रमण किया। 1971 में तो 'मुक्तिवाहिनी' के साथ बांग्ला देश की गुप्तयात्रा की एवं क्रांति का आँखों देखा प्रामाणिक वर्णन उपस्थित किया।

रचनाकार की दृष्टि से देखा जाए तो अपनी रचनाओं में कथ्य एवं शिल्प के स्तर पर भारतीजी प्रयोगधर्मी रहे हैं। जहाँ 'सूरज का सातवां घोड़ा' नवीन शिल्प लेकर आता है वहीं 'अंधा युग' पुरातन कथा का आधार लेकर कई नवीन समस्याओं से भी रूबरू कराता है। कथावस्तु प्रख्यात होते हुए भी अर्थ के स्तर पर समकालीन होने का दावा ठोकती है।